भाव और भावना

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक: महात्मा गांधी)

भाग १७ | सम्पादक: मगनभाअी प्रभुदास देसाअी | अंक २

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १४ मार्च, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

राष्ट्रपतिका आश्वासन

२२ फरवरी, १९५३ को मद्रासकी दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाने राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसादको जो मानपत्र दिया, अुसका हिन्दीमें जवाब देते हुअे अुन्होंने कहा:

"हमारे संविधानमें यह चीज साफ कर दी गअी है कि भारतकी राष्ट्रभाषा हिन्दी होगी। यह निश्चित है कि पद और प्रतिष्ठाकी प्राप्तिके लिअे हिन्दीको प्रादेशिक भाषाओंकी होड़में खड़ा करनेका अिरादा नहीं है; बल्कि दक्षिणमें तामिल, तेलगू, मलयालम, कन्नड़ और दूसरे प्रदेशोंमें मराठी, गुजराती, बंगाली जैसी प्रादेशिक भाषाओंको समृद्ध बनानेकी आशा रखी गअी है। दरअसल हिन्दीकी अेकमात्र होड़ अंग्रेजीके साथ है। प्रश्न यह है कि हिन्दी जल्दीसे जल्दी अंग्रेजीकी जगह कैसे ले सकती है। अिसलिअे किसीका यह सोचना गलत होगा कि हिन्दी प्रान्तीय या प्रादेशिक भाषाओंकी जगह लेनेकी या अुनमें से किसीको कमजोर बनानेकी कोशिश कर रही है। किसीको अपने मनमें यह शंका नहीं रखनी चाहिये। संविधान बनानेवालोंके मनमें तो कभी यह विचार रहा ही नहीं।

"संविधानने प्रादेशिक भाषाओंको अूंचा स्थान दिया है और वह अुन्हें समृद्ध और सम्पन्न देखना चाहता है। अगर दक्षिणके लोगोंमें अैसी कोअी भी गलतफहमी हो कि हिन्दी यहांकी प्रादेशिक भाषाओं पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहती है, तो मैं आपको अिस बातका विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हिन्दी प्रादेशिक भाषाओंका स्थान ले अैसी आशा ही नहीं रखी गअी है। हिन्दी राष्ट्रभाषा मानी जानी चाहिये और राष्ट्रभाषाके तौर पर ही अुसका अुपयोग किया जाना चाहिये। संविधानने अुसे राष्ट्रभाषा माना है, क्योंकि वह अैसी आसानसे आसान भाषा है, जिसे देशके ज्यादातर लोग समझ सकते हैं। जो लोग यह चाहते हैं कि अुनकी आवाज न सिर्फ अुनके अपने प्रदेशमें, बल्कि सारे देशमें असरकारक बने, अुन्हें अंग्रेजीकी अपनी श्रद्धा छोड़ देनी चाहिये और हिन्दीको अपनाना चाहिये।" ('हिन्दू', मद्रास, २४-२-'५३)

यह स्पष्ट है कि हमारी महान प्रादेशिक भाषाओंको शिक्षाके सारे दर्जोंमें — अिसमें अुच्च शिक्षा और अनुसंधानका काम भी शामिल है — शिक्षाके माध्यमका अुचित स्थान प्राप्त होना चाहिये। भारतके संविधानमें यह कल्पना नहीं की गअी है कि हिन्दी शिक्षाके क्षेत्रमें प्रादेशिक भाषाओंके साथ होड़में खड़ी हो। फिर भी कुछ लोग अैसे हैं, जो प्रादेशिक भाषाओंको अुनके अपने प्रदेशोंमें अिस अुचित और अधिकारपूर्ण पदसे हटाना चाहते हैं। अुन्हें यह खयाल रखना चाहिये कि अैसा करना न सिर्फ गलत और अनुचित है, बल्कि संविधानकी भावनाके भी खिलाफ है। अिसलिअे हमारे सांस्कृतिक स्वतंत्रता और विकासके अिस अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषयमें राष्ट्रपतिका यह जोरदार आश्वासन स्वागतके लायक है। अिससे अब भी अिस सम्बन्धमें कोअी भ्रम रह गया होगा, तो वह मिट जायगा।

५-३-'५३ — मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

भूदान हृदय-शुद्धिका कार्यक्रम है

दुनियामें जो क्रांतियां हुअी हैं, वे तो जीवन समर्पण करनेवालोंसे ही हुअी हैं। महीने भर या बीच-बीचमें सार्वजनिक काम करनेवालोंसे नहीं हुअीं। अिसलिअे मैं अपने सब मित्रोंसे कहना चाहता हूं कि वे अपना सारा काम छोड़कर भूदान-यज्ञके काममें लग जायं। अपने व्यक्तिगत कार्योंको भुला दें और कम-से-कम १९५७ तक अपना जीवन अिसी कामके लिअे दान दें। अगर अिस भावनासे हम सब काममें लग जायेंगे, तो हमें अेक ताकत मिल जायेगी। आज हम बहुत छोटे हैं, परन्तु अिस कार्यके स्पर्शसे हममें अैसी ताकत पैदा होगी, जिससे हमारे हाथसे बड़ा काम होगा। हम छोटे ही रहेंगे और हाथसे बड़ा काम करेंगे। यही भक्तोंका लक्षण है। आज गयासे हमारे कुछ कार्यकर्ता भूदानका काम करके आये हैं। छोटे-छोटे लोग हैं। नाम तो अुनका नहीं हुआ, पर अुनके हाथमें ताकत थी और हृदयमें श्रद्धा। अुन्हें हृदय-शुद्धिका भी अनुभव मिला। वे छोटे लोग हैं, पर अुनके पास परमेश्वरका नाम है और अुनका कार्य लोगोंने देख लिया। जो प्रत्यक्ष दर्शन ज्ञानसे होता है, वह श्रद्धासे भी होता है। जो कार्य रामसे होता है, वह हनुमानसे भी होता है। रामसे काम होता है अुनके ज्ञानके कारण और हनुमानसे काम होता है अुनकी श्रद्धाके कारण। मैं तो सोच रहा हूं कि जहां तक मेरे विचारोंको लोग समझें, वहां तक अुनको यही सलाह दूं कि अिस कामके लिअे अपने सर्वस्वका दान करो। अुसके लिअे तो बापूने हमें आदेश दे रखा है कि 'करो या मरो'। वह आदेश अब भी अधूरा है। अभी करना भी बाकी है और मरना भी बाकी है।

जब कभी हम हीन भावनाको देखें, तब अुसका निषेध करनेकी अपेक्षा अुसकी अुपेक्षा करना अधिक अच्छा होता है। दुर्भावनाअें स्वतंत्र हस्ती नहीं रखती हैं। लेकिन जब हम अुनका निषेध करते हैं, तब हम अुनको नाहक महत्त्व देते हैं और अुससे अुनको बल मिल जाता है। अिसलिअे मैं किसीकी टीका नहीं करता हूं। हरअेकके गुण ही गाता हूं। गुणगान करना ही भक्तोंका लक्षण है। अुपेक्षाके अलावा और भी अेक वस्तु है, जिससे दुर्भावनाओंका रूपान्तर सद्भावनाओंमें होता है, और वह है हरि-भावना। जिस

www.vinoba.in

तरह मां अपने दुर्व्यसनी बच्चेके लिअे भी आशा रखती है कि वह सुधरेगा, सिर्फ आशा ही नहीं रखती बल्कि प्यार भी करती है, अुसी तरह हमें भी दुनियाकी तरफ देखना चाहिये। हमें समझना चाहिये कि यहां अेक नाटक हो रहा है और अुसके नाना बाहरी रूप होते हैं। लेकिन अिस बाहरी रूपको भूलकर हमें अन्तःस्तलके परमात्माको देखना चाहिये। तीसरी बात यह है कि हमें कोअी अैसा महान कार्यक्रम अुठाना चाहिये, जिससे संकुचित विचार स्वयमेव खतम हो जायं। बड़े संकल्पमें भगवानकी मददकी आवश्यकता होती है, लेकिन हम बड़े काम अुठाते नहीं हैं। भक्त हमेशा महान काम अुठाते हैं और जहां आवश्यकता होती है, वहां मददके लिअे भगवान हमेशा तैयार रहता है। परमेश्वरका नाम लेकर अगर हम बड़ा काम अुठायें, तो दुर्भावनाअें और संकुचित भावनाअें टिकती नहीं हैं।

भूदानके अिस कार्यक्रमसे हम सबकी हृदय-शुद्धि होनेवाली है। यह कार्यक्रम अितना महान है कि अिसे करनेमें हमें कदम-कदम पर अीश्वरका नाम लेना होगा। भगवानके अनेक रूप हमारे सामने खड़े होंगे और अीश्वर हमारी परीक्षा लेगा। जमीन देनेवालेके रूपमें, जमीन देनेसे अिनकार करनेवालेके रूपमें, जमीन हासिल करनेवालेके रूपमें, अच्छे तरीकेसे हासिल करनेवालेके रूपमें, गलत रूपसे हासिल करनेवालेके रूपमें, मत्सर-बुद्धिसे काम करनेवालोंके रूपमें — अिस तरह परमेश्वरका विविध दर्शन हमें मिलेगा। किसीने मत्सर-बुद्धिसे काम किया, तो भी कोअी हर्ज नहीं। किसी भी अुद्देश्यसे क्यों न हो, अगर अच्छी चीजका स्पर्श हो गया, तो वह आगे दुरुस्त हो जायगा। देनेवालोंको भी हम भगवानके रूपमें पहचानें और न देनेवालोंको भी। अिस तरह ध्यान करनेका मौका अिस काममें मिलता है, जिससे चित्तशुद्धि होनेमें मदद मिलती है। अिसलिअे मैं अुम्मीद करता हूं कि हमारे कार्यकर्ता जब अिस कामको अुठायेंगे, तब अुनके दोष स्वयं क्षीण हो जायंगे और गुणोंका अुत्कर्ष होगा। बीमारीके अिन तीन महीनोंमें मैंने बहुत आत्मपरीक्षण किया, और मैंने देखा है कि दो साल पहले मुझमें जितने दोष थे वे आज नहीं हैं, और अुस समय जितने गुण नहीं थे अुतने आज हैं। मैं भगवानके नजदीक बहुत वेगसे जा रहा हूं, अैसा मुझे अनुभव हो रहा है। अिसलिअे मैं मानता हूं कि जो लोग अिस कामको अुठायेंगे, अुनको भी यह अनुभव आयेगा। *

* १–३–'५३ को चांदिलकी प्रार्थना-सभामें दिया हुआ श्री विनोबाका प्रवचन।

लोक-जीवन

लेखक: काका कालेलकर

यह मराठी पुस्तक 'हिंडलग्याचा प्रसाद' नामक पहले छपी हुअी पुस्तकका संक्षिप्त संस्करण है। अिसमें लेखकने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक वगैरा अनेक आधुनिक प्रश्नोंकी सर्वथा नवी दृष्टिसे चर्चा की है।

कीमत १–४–०　　डाकखर्च ०–४–०

शराबबन्दी क्यों?

लेखक: भारतन् कुमारप्पा

अनुवादक: रामनारायण चौधरी

कीमत ०–१०–०　　डाकखर्च ०–३–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद – ९

गांधीजी प्रणीत सर्व-समाजी विवाह-विधि

अपने जीवनके महत्त्वके प्रसंगको पवित्र और शुभ बनानेके लिअे मनुष्यने कुछ संस्कार और विधियां बना रखी हैं। अिनमें सबसे श्रेष्ठ है विवाह-विधि। भिन्न परिवारके, भिन्न गोत्रके और भिन्न प्रदेशके दो जीव प्रेमके कारण अेकत्र रहना चाहते हैं, अेक-दूसरेमें ओत-प्रोत होनेका निश्चय करते हैं और अेक नये खानदानकी स्थापना करना चाहते हैं। अेक युवक अेक युवतिको अपने जीवनकी साथी बनाकर वंशविस्तारका संकल्प करता है। जो दो थे, वे अेक बनना चाहते हैं। अेकके अनेक होते हुअे भी अपनी अेकता दिन-पर-दिन अधिक महसूस करना चाहते हैं। जीवनके अिस महान परिवर्तनके लिअे अुचित विधिकी आवश्यकता है।

जिन आदर्शोंको लेकर दम्पती-जीवनका आरंभ होता है, अुन आदर्शोंका प्रतिबिम्ब समाजको विवाह-विधिमें मिलना चाहिये। यों देखा जाय तो परस्पर प्रेम, निष्ठा और आदर ही संबंधका मुख्य बंधन है। जीवनमें भले-बुरे असंख्य प्रसंग अुपस्थित होते हैं। मनुष्यका स्वभाव भी बदल जाता है। जीवनके आदर्शोंमें भी तबदीलियां होती हैं। अैसे नित्यके परिवर्तनमें प्रेमको स्थायी रूपसे रखना और समस्त जीवन-यात्रामें अुसे निभाना, अुसे समृद्ध करना और अुसकी सुगंधि चारों ओर फैलाकर गृहस्थाश्रमको समाजके लिअे आशीर्वादकारी बनाना, यह है दम्पती-जीवनकी बुनियाद।

पतिकी माली हालतमें तबदीली हुअी तो पत्नी तुरंत अुसके अनुसार अपने जीवनमें, अपनी आदतोंमें, परिवर्तन कर ही डालती है। पतिका वैभव बढ़ा, तो पत्नी गृहलक्ष्मी बनकर आसपासके सब लोगोंको सम्हालती है। भाग्यवश पतिको बुरे दिन देखने पड़ें, तो पत्नी श्रमसहिष्णु बनती है और अपनी प्रसन्नतासे पतिकी हिम्मत बढ़ाती है। ऋतु-चक्र बदलते ही जिस तरह पशु-पक्षियोंका जीवन-क्रम बदलता है, अुसी तरह भाग्य-चक्र बदलते ही पति और पत्नी अेक-दूसरेके प्रति अनुकूल होनेकी पराकाष्ठा करते हैं।

वैवाहिक जीवनमें दोनों मिलकर प्रथम अन्न-वस्त्र, घर और अुपकरण आदि मसाला जुटाते हैं। गाय, बैल आदि पशुओंकी मदद लेते हैं। वृक्ष-वनस्पतिसे आहार प्राप्त करते हैं। कपास, अून आदि तन्तुओंसे कपड़े बनाते हैं। सहजीवनके नियम बनानेके लिअे जीवनका शास्त्र ढूंढ़ते हैं। पहाड़, नदी, तालाब, वन-अुपवन आदिका सहारा लेते हैं। प्राथमिक अवस्थामें गुफायें ढूंढ़ते हैं या पहाड़के पत्थरको काटकर कृत्रिम गुफायें, लयन बनाते हैं। आगे जाकर बड़े-बड़े प्रासाद बनाते हैं। नगों (पहाड़ों) की रक्षा पाकर नगरोंकी स्थापना करते हैं। पेशेके अनुसार समाजके भिन्न-भिन्न वर्ग और वर्णकी स्थापना करते हैं। आमोद-प्रमोदके लिअे संगीत, चित्रकला, नाट्य, नृत्य आदिका आविष्कार करते हैं। और अनन्त कालमें अपना स्थान निश्चित करनेके लिअे श्राद्धके द्वारा परम्परा मजबूत करते हैं।

अिस तरह दंपती-जीवन यानी गृहस्थाश्रम और मानवी संस्कृति दोनों अेक-दूसरेके साथ संबंधित हैं। अैसे संस्कारी जीवनके आदर्शोंको व्यक्त करनेके लिअे हमारी विवाह-विधिमें सप्तपदीकी व्यवस्था की थी।

"जो लोग सात कदम साथ चलते हैं, अुनके बीच मैत्री होती है", यह कहावत बहुत पुरानी है। अिसका शब्दार्थ कुछ कामका नहीं। आजकल रास्ते पर सैकड़ों लोग सात कदम क्या, सात सौ कदम साथ चलते हैं; लेकिन अेक-दूसरेका नाम तक नहीं जानते। सप्तपदीका अर्थ है कि शुद्ध जीवनके सात आदर्शोंमें जिन लोगोंने अेक-दूसरेका साथ दिया, अुन्हींके बीच जीवन-व्यापी मैत्री होती है और वह जीवनके अन्त तक टिक भी सकती है। सप्तपदीके अिन सात आदर्शोंकी स्थापनाके लिअे जो जीवन-साधना जरूरी है, अुसीको महात्माजीने "सप्तयज्ञ" का नाम दिया। यह

www.vinoba.in

GANDHI GYAN MANDIR WARDHA.

ही जीवनकी साधना है। संस्कारी जीवन यज्ञ, दान और तपकी बुनियाद पर खड़ा है।

विवाह-विधिके द्वारा गृहस्थाश्रमके और मानवी-जीवनके आदर्शोंको व्यक्त करनेकी कोशिश भिन्न-भिन्न ऋषियोंने की है। हरअेक धर्मने अपने-अपने लोगोंके लिअे विवाह-विधि कायम की है। लेकिन अब, जब हम अनेक धर्मोंका अेक विशाल कुटुम्ब बनाने जा रहे हैं, सर्व-धर्म-समभाव या सर्व-धर्म-समभाव-मूलक नयी विधिकी आवश्यकता है। सर्व-धर्म-समभावके ऋषि महात्मा गांधीने हमें अैसी अेक विधि तैयार करके दी है। जिस तरह अन्य विधियां कानूनके द्वारा मान्य हुअी हैं, अुसी तरह अिस युगकी नयी विधि भी समाज-मान्य और विधान-मान्य होनी चाहिये।

स्वतंत्र भारतके राज्यको हम Secular democracy कहते हैं। Secular के मानी होते हैं, वह अवस्था जिसका धर्मके साथ कोअी संबंध नहीं है। रूसका राज Secular है। वह धर्मको नहीं मानता है। वह कहता है कि धर्म अेक ढकोसला है और अुसके द्वारा सामाजिक अन्याय और अत्याचारको सहारा मिलता है।

हमारी राज्य-व्यवस्था अुस अर्थमें Secular नहीं है। हमारी सरकार और हमारी संस्कृति भी धार्मिकताकी, आध्यात्मिकताकी अिज़्ज़त करती है। लेकिन अुसमें किसी भी अेक धर्मका विशेष पक्षपात नहीं है। सब धर्मोंके प्रति अुसके मनमें अेक-सा आदर है; अेक-सी श्रद्धा है। अैसी हालतमें जब भिन्नधर्मी लोगोंके बीच विवाह होनेकी परिस्थिति खड़ी होती है, तब विवाह-विधि अैसी होनी चाहिये, जिसके अंदर धार्मिकता पूरी हो, किन्तु किसी विशेष धर्मका आग्रह न हो। धर्मपरायण किन्तु विशिष्ट धर्म-निरपेक्ष विधिके द्वारा ही अैसे विवाह संपन्न हो सकते हैं।

गांधीजीकी बनायी हुअी विवाह-विधि हम नीचे देते हैं। अिसके लिअे आवश्यक कानून बनाकर लोगोंको अेक नयी सहूलियत बनाकर देना जरूरी है। स्वराज्य सरकारका यह पवित्र कर्तव्य है। अिसके द्वारा समाजकी धार्मिकता बढ़ेगी और सब धर्मोंके बीच कुटुम्ब-भाव पैदा होगा।

गांधीजी प्रणीत विवाह-विधि

श्री . . . और श्रीमती . . . की विवाह-विधि होती है, अुसे मैं अीश्वरको दरमियान समझकर करता हूं। आप दोनों भी अैसा करें। अिस विधिमें आप जो साक्षी बने हैं, अपने मन पवित्र रखें और विवाहाकांक्षीकी पवित्र अिच्छाके सहायभूत हों।

अब मैं अीश्वरको धन्यवाद देनेवाला भजन गाता हूं, सो ध्यानसे सुनें।

(राग भैरव, ताल धमार)

"आज मिल सब गीत गाओ
अुस प्रभुके धन्यवाद
जिसका यश नित गाते हैं
गंधर्व मुनिगण धन्यवाद . . . आज।
मंदिरोंमें कंदरोंमें परवतोंके शिखर पर
देते हैं लगातार सौ सौ बार मुनिवर धन्यवाद
आज मिल सब गीत गाओ।"

१. प्रश्न : आप दोनों स्वस्थ-चित्त हैं?
अुत्तर : (दोनों) जी हां।

२. प्रश्न : आपने कल सात यज्ञ*, जैसा बताया गया था, किये?
अुत्तर : जी हां।

३. प्रश्न : आप लोग जानते हैं न कि यह संबंध विषयसुखके लिअे और भोगके लिअे नहीं है?
अुत्तर : जी हां।

४. प्रश्न : अिस आश्रममें* आप धर्मभावसे, त्यागभावसे और सेवाभावसे प्रवेश करते हैं?
अुत्तर जी हां।

५. प्रश्न : अिस कारण दोनों अेक-दूसरेको सेवाकार्यमें विक्षेप नहीं डालोगे, लेकिन अेक-दूसरेकी मदद करोगे?
अुत्तर : जी हां।

६. प्रश्न : अेक-दूसरेके प्रति मन-वचन-कर्मसे हमेशा वफादार रहोगे?
अुत्तर : जी हां।

७. प्रश्न : हिन्दुस्तान जब तक स्वतंत्र नहीं होगा, तब तक आप प्रजोत्पत्तिके काममें नहीं लगनेका भरसक प्रयत्न करेंगे?×
अुत्तर : जी हां।

८. प्रश्न : जो अस्पृश्य माने जाते हैं, अुनके साथ रोटी-बेटीका व्यवहार करने-करानेमें मानते हैं न?
अुत्तर : जी हां।

९. प्रश्न : स्त्री-पुरुषको समान अधिकार है, अैसा आप मानते हैं न?
अुत्तर : जी हां

१०. प्रश्न : आप लोग अेक-दूसरेके मित्र हैं, दास-दासी कभी नहीं, यह भी ठीक है न?
अुत्तर : जी हां।

११. प्रश्न : नंबर दो प्रश्नमें बताये गये सात यज्ञ सप्तपदीका स्थान लेते हैं, यह भी आप समझते हैं न?
अुत्तर : जी हां।

अब मैं आपको अिस बन्धनमें अपने हाथसे काते हुअे सूतके मारफत डालता हूं। आप लोग अिस सूत-हारको जतनसे रखें और याद रखें कि आपका बन्धन कभी आप नहीं तोड़ेंगे और आपने जो प्रतिज्ञा की है, अुसके पालनमें आप अिस धर्मक्रियाको याद करके भगवानसे मांगें कि सर्व शक्तिमान परमात्मा आपको सहाय करे।

अब हम साथ मिलकर रामधुन गायेंगे।

(विवाह-विधि समाप्त)

सात यज्ञ

१. विवाह-बंधन तक तुम दोनोंको अुपवास रखना चाहिये (फल ले सकते हैं)।

२. तुम दोनोंको गीताका १२ वां अध्याय पढ़ना चाहिये। और अुसके अर्थका चिंतन करना चाहिये।

३. हरअेक अपने हिस्सेके जमीनके टुकड़े, जिनमें पेड़ अुगे हों, साफ करे।

४. हरअेक गोशालामें जाकर गायकी सेवा करे।

५. हरअेक कुअेंके आसपास सफाअी करे।

६. हरअेक पाखानेकी सफाअी अच्छी तरह करे।

७. हरअेक रोज काते।

यह सब काम हरअेक जहां तक हो सके यज्ञकी भावनासे करे।

* * *

अिस विधिके अनुसार पहली विवाह-विधि श्री प्रभाकरजीने करायी थी, जो हरिजन मां-बापके पुत्र हैं और जिनके मां-बाप खिस्ती बन गये थे।

---

* सप्तपदीके बदले जो सात यज्ञ करनेके हैं, वे विधिके अंतमें दिये गये हैं। ये यज्ञ विवाहके दिन किये जायं। यहां 'कल' शब्दका प्रयोग अिसलिअे है कि वर-वधूको ये यज्ञ अगले दिन बताये गये थे। अिसलिअे आयंदा यह प्रश्न अिस तरह रहना चाहिये "आपने सात यज्ञ किये?"

* गृहस्थाश्रममें।

× अब अिस प्रश्नकी जरूरत नहीं रही।

www.vinoba.in

वरके साथकी बातचीतमें गांधीजीने यह भी कहा था — I believe in one man one wife and vice versa for all time.

"मैं मानता हूं कि हर हालतमें अेक पुरुषको अक ही पत्नी हो और अेक स्त्रीको अेक ही पति।"

(जून १९५२ के 'मंगलप्रभात' से) काका कालेलकर

हरिजनसेवक

१४ मार्च १९५३

भाव और भावना

खादी और ग्रामोद्योगकी चीजें बिकती नहीं हैं, क्योंकि वे मिल या कारखानेमें बनी चीजोंकी तुलनामें महंगी होती हैं; अिससे वे भावनाके बल पर ही चलें तो चल सकती हैं। परन्तु भावनाकी अेक मर्यादा होती है, और अुसके बल पर हम ग्रामोद्योगी स्वदेशी माल और खादीको अितना व्यापक नहीं बना सकते जितना अुन्हें होना चाहिये और हम बनाना चाहते हैं। अिससे कहा जाता है कि भावनाका बल नहीं, लेकिन भावका बल यदि हम पा सकें तो ही अिन चीजोंका अुपयोग बढ़ सकेगा और वे हमारे समाजमें चलेंगी। सारांश यह कि भावनाके साथ भावका भी बल पैदा करना चाहिये।

यह सवाल पुराना है। आज फिरसे अुठ रहा है, क्योंकि अब सरकार और लोगोंकी दृष्टि फिरसे अिन चीजोंकी तरफ जाने लगी है। अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्डका बनना अिस बातका सबूत है। अब हम किस तरह काम करें? यह नया बोर्ड किस तरह अपना काम करे? सरकार अिस बातमें क्या नीति रखे? अिन सवालों पर अब हमें बड़ी जल्दीसे सोचना चाहिये।

अेक बात शुरूमें समझ लेनी चाहिये। हम जो कुछ भी खरीदते हैं, वह सिर्फ भाव देखकर ही खरीदते हैं, यह मानना कहां तक ठीक है? भाव और भावना दोनोंमें निकटका संबन्ध रहता ही है। रूप-रंग, सुन्दरता, फैशन वगैराके खयाल हमारे मन पर हमेशा अपना असर रखते हैं; और अुसके कारण आज विज्ञापनका अेक शास्त्र बना है, जिसके जरिये हमारे मनको पकड़नेकी चेष्टा बड़े जोरोंसे की जाती है। अुसके साथ कम या किफायत भावका भी अेक कारण जरूर रहता है। लेकिन हम सस्तीसे सस्ती चीज ही लेते हैं, अैसा नहीं देखनेमें आता; कला, सुन्दरता, फैशन अित्यादिके खयाल भी हमारी पसन्दगी पर असर करनेवाले बल हैं। यानी भावना भी अेक स्थायी बल है, जिसका असर भी काम करता है। भाव और भावनामें विरोध ही विरोध है, अैसा नहीं कह सकते। भावना भी जरूरी है और किफायत भाव भी। अितना ही नहीं, अेक तीसरी बात भी है। हमारा स्वदेशी माल अच्छा हो, प्रमाणित हो और बिलकुल मारकेका हो, तो भाव भी अच्छा मिलेगा और भावना भी बनी रहेगी। ग्रामोद्योग और खादीका काम करना हो, तो अिन बातोंकी तरफ नजर रखनी होगी। अिनको अब संक्षेपमें सोचें।

खादी और ग्रामोद्योगके बारेमें हमारी भावना आज क्या है? गांधीजीने अिनका हमारी स्वतंत्रताकी भावनाके साथ सम्बन्ध बताया। अुन्होंने कहा कि हमारी गरीबी और गुलामीका कारण हमारे घरेलू और देहाती अुद्योग-धंधोंके नाशमें और अुसके साथ हमारे अूपरके लोगोंके संस्कारमें रहा है। स्वराज पाना है तो अुसका रास्ता स्वदेशीसे खुलेगा। आज भी यह अुतनी ही सच्ची बात है।

गांधीजीने यह भी बताया कि हमारी अपार बेकारी और अर्ध-बेकारीका हल भी स्वदेशीमें ही रहा है। खादी और ग्रामोद्योगोंके बिना हमारी खेती जम नहीं सकती। और हमारा देश खेतीप्रधान है; खेती मरेगी तो अुसके साथ हम भी मरेंगे। स्वराज आने पर बेकारी और अन्न-वस्त्रका सवाल अपने आप सबसे अूपर अुठ आया है। आज हम समझने लगे हैं कि कल-कारखानोंसे हम सबको काम नहीं दे सकेंगे। खादी और ग्रामोद्योगोंको भी अपनाना होगा, यह बात दिन प्रतिदिन हमारे लोगोंके मनमें ज्यादा साफ होती रहनी चाहिये। सरकारको भी चाहिये कि वह खुद भी अिस बातको साफ समझने लगे और अपनी नीति-रीति अिसके अनुकूल बनानेके लिअे ठोस प्रयत्न करे। आज तो यही कहना पड़ेगा कि अिस तरफ सरकारका ध्यान नहीं है। और लोकमत भी अितना साफ नहीं है। यंत्रोद्योगोंकी चमक-दमकसे हमारी भावना कलुषित हो गअी है; अुसके कारण हम यह नहीं समझ पाते कि खादी, ग्रामोद्योग और स्वदेशीके बिना न तो हमारा आर्थिक विकास होगा और न बकारी ही दूर होगी।

दूसरा सवाल भावका है। हमारी भावना यदि साबूत हो, तो भावके सवालमें कुछ मदद जरूर पहुंचती है। लेकिन भावमें भी दुरुस्ती होनी चाहिये। भावमें किफायत हो, यह जरूरी है। और यह भी जरूरी है कि माल पैदा करनेवालोंको अुनकी मजदूरीके पूरे दाम मिलें। अुनका शोषण न हो। जीवन-निर्वाहके लिअे कमसे कम जरूरी मेहनताना अुनको अवश्य मिलना चाहिये।

यह कैसे हो? अेक जमाना था जब कि हमारा दस्तकारीका देहाती माल विलायतके कल-कारखानोंके मालसे सस्ता पड़ता था। अंग्रेज सरकारने अपने कायदेके बलसे और अर्थनीतिकी चाल चलकर यह हालत बदल दी। जो सस्ता था अुसको महंगा कर दिया, और जो महंगा था अुसको सस्ता। आज अिस चीजको बदलना है। अुसके लिअे यही तरीका काममें आ सकता है, काममें लाना होगा। देहाती अुद्योगोंको संरक्षण और मदद देनी होगी। जरूरी सेस, जकात वगैरा लगानेके बारेमें भी सोचना पड़ेगा। तब कहीं जाकर भावका सवाल हल होगा। यह काम अगर हमें करना है, तो सावधानीसे सरकारोंको अपनी आर्थिक नीतिके बारेमें खास विचार करना होगा। यह काम बड़ा कठिन है; लेकिन करना तो होगा ही। क्योंकि अिसके बिना कोअी चारा नहीं है।

तीसरा सवाल है माल अच्छा और प्रमाणित हो। अिसमें दो बातें हैं — अेक तो माल अच्छा बनानेके शास्त्रकी और दूसरी बनानेवालेकी प्रामाणिकताकी। पहला सवाल शिक्षा और संशोधनका है। ग्रामोद्योग बोर्ड और सरकारोंको चाहिये कि ग्रामोद्योगोंकी शिक्षा, अुनकी प्रगति और सुधार-संशोधनका काम जारी करें। और माल बनानेवाला कारीगर वर्ग यह जरूरी माने कि स्वदेशी भावनाके बल पर हम धोखेबाजी करनेकी लालचमें न फंस जायं। हमारा माल शुद्ध और अुम्दा हो, यह हमारे ही हितमें है। तब जाकर भावना भी पुष्ट रहेगी और भाव भी अच्छा मिल सकेगा।

अिस तरह, ग्रामोद्योगी चीजोंका भाव, अुनके लिअे भावना, और कारीगर वर्गकी कुशलता और नेकनीयती — अिन तीनों बातोंमें बहुत गहरा सम्बन्ध है; तीनोंको संभालना होगा। लोगोंमें अिन सब बातोंका विचार जाग्रत करना अब हमारा मुख्य काम बनता है।

६-३-'५३

मगनभाअी देसाअी

www.vinoba.in

टिप्पणियां

महान तानाशाह

कल हमें ये अत्यन्त दुःखद समाचार मिले कि मार्शल स्टालिनका मास्कोमें रातके १-२० बजे (भारतीय समय) अवसान हो गया। अुनके अवसानसे सोवियट रूसकी प्रजाको जो कभी न पूरी होनेवाली क्षति पहुंची है और अुस पर वियोगका जो भारी दुःख आ पड़ा है, अुसमें सब लोग अुसके साथ गहरी सहानुभूति प्रकट करेंगे। अितिहासमें मार्शल स्टालिन आधुनिक रूसके निर्माताके नामसे प्रसिद्ध होंगे। मार्शल स्टालिन अुन अिने-गिने व्यक्तियोंमें से थे, जिन्हें अीश्वरने हमारी पीढ़ीकी दुनियाकी राजनीतिको गढ़नेका महान कार्य सौंपा था। विश्व-अितिहासके सबसे ज्यादा अुथल-पुथलके समयमें अुन्हें काम करना पड़ा था। वे अपने पहले रूसके प्रधानमंत्री-पद पर आरूढ़ होनेवाले प्रसिद्ध नेता लेनिनके साथी और सहकारी थे। मार्शल स्टालिनने १९२४ में यह पद ग्रहण किया और जीवनके अन्त तक अुस पर बने रहे। वे क्रांतिकारी बोल्शेविक पार्टीके थे। अुस पार्टीकी तरफसे जो कुछ प्रकाश अुन्हें मिला, अुसके अनुसार अिस सारे समयमें अुन्होंने रूसको महान और शक्तिशाली बनानेका प्रयत्न किया। अुस पार्टीके सिद्धान्तोंसे किसीका कितना ही मतभेद क्यों न हो, अिसे तो सब कोअी स्वीकार करेंगे कि मार्शल स्टालिनने, अपनी सम्पूर्ण शक्ति और पुरुषार्थके साथ, अुन सिद्धान्तोंको अपने जीवनमें अुतारनेका प्रयत्न किया, जिन्हें वे रूसकी प्रजा और दुनियाके लिअे सच्चे और अच्छे मानते थे। और वे अपने जीवन-कार्यमें सफल हुअे। हम आशा करें कि अुनके जीवनकी तरह अुनकी मृत्यु भी रूसको शान्ति और यश देनेवाली सिद्ध होगी। अुनकी आत्माको चिर शान्ति प्राप्त हो!

७-३-'५३ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

अंग्रेजीके बारेमें प्रधानमंत्रीकी राय

नीचेकी खबर ता० १७ फरवरी, १९५३ के 'हिन्दुस्तान टाअिम्स' से ली गअी है:

> "माडर्न स्कूल, नअी दिल्लीके संस्थापक-दिवसके अवसर पर बोलते हुअे श्री नेहरूने अुन लोगोंको अच्छी फटकार लगायी, जो झूठे अभिमान और प्रदर्शनके मोहमें अंग्रेजी जानने और बोलने पर घमंड करते हैं, अंग्रेजी पर अनुचित जोर देते हैं और अैसा मानते हैं कि वे अुन लोगोंसे बड़े हैं जो अंग्रेजी नहीं जानते।
>
> "प्रधानमंत्रीने कहा कि मुझे अैसा मालूम होता है कि अिस स्कूलमें अंग्रेजी पर अुचितसे अधिक जोर दिया जाता है। अुन्होंने कहा, अंग्रेजी बड़ी अच्छी भाषा है और फ्रेंच या फारसी आदि दूसरी भाषाओंकी तरह अुसका ज्ञान होना अच्छी बात है। अंग्रेजीके खिलाफ मुझे कुछ नहीं कहना है, लेकिन अंग्रेजी जाननेवाले और अंग्रेजी न जाननेवाले — अिस तरह लोगोंका वर्गीकरण करना बहुत बुरा है। 'आखिर हमारी भाषा हमारी अपनी चीज है, और हमें अुसका गर्व होना चाहिये।'
>
> "अुन्होंने स्कूलोंके सिवा कालेजोंमें भी बुनियादी तालीम दाखिल करनेके पक्षमें अपनी राय जाहिर की और अिस बात पर खेद प्रगट किया कि बुनियादी तालीम चलानेके काममें प्रगति जितनी शीघ्र होनी चाहिये थी, अुतनी नहीं हुअी।"

हमारे राष्ट्रीय जीवन और शिक्षा-क्रममें अंग्रेजीका क्या स्थान होना चाहिये, अिस विषय पर प्रधानमंत्रीकी अुक्त राय बहुत स्वागत करने योग्य है। अनेक व्यक्ति, जिन्हें महत्त्व और प्रतिष्ठा प्राप्त है, आजकल अंग्रेजीके प्रति अपने अनुचित मोहके कारण अिस विषय पर मौके-बेमौके अजीब विचार प्रगट कर रहे हैं। अुन पर सामान्य जनताको राह दिखानेकी जिम्मेवारी है। लेकिन अपनी अधूरी सोची हुअी राय अिस तरह जाहिर करके वे दुर्भाग्य-वश अुसे भ्रममें डाल रहे हैं। अैसी स्थितिमें प्रधानमंत्रीकी रायका मूल्य और ज्यादा बढ़ जाता है।

२६-२-'५३ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

गवर्नर सम्बन्धी खर्च

अुस दिन बम्बअीकी धारासभामें खर्चकी अेक अतिरिक्त मांगके बारेमें चर्चा छिड़ गअी। यह मांग बम्बअी राज्यके राजभवनोंमें परदे तथा कुर्सियों और सोफोंके गिलाफ बदलने और चांदीकी थालें व दूसरी चीजें खरीदनेके बारेमें थी। अेक सदस्यने अिसका विरोध करते हुअे कहा कि जब राज्यमें अकाल पड़ा हुआ है, तब अैसी महंगी चीजों और चांदीकी थालों पर पैसा नहीं खर्च किया जाना चाहिये।

जवाबमें अर्थ-मंत्रीने अिस खर्चको अुचित ठहराया और कहा कि राज्यके सबसे अूंचे अधिकारीके मान और प्रतिष्ठाको कायम रखना चाहिये। अुन्होंने समझाया कि ये सब चीजें बदलनी ही होंगी, क्योंकि अुन्हें बदलनेका प्रश्न पिछले कुछ सालसे खटाअीमें पड़ा हुआ है।

मान-मर्तबा और प्रतिष्ठाका सवाल मूल्योंका सवाल है। अिसमें शक नहीं कि शाही ठाटबाट और खर्चीली तड़क-भड़क वाले मान-मर्तबा और प्रतिष्ठाके खयाल पहलेकी तरह आज भी हममें मौजूद हैं। लेकिन क्या प्रजासत्ताक भारतमें अिन खयालोंको पुराने जमानेका नहीं माना जाना चाहिये और अुनमें परिवर्तन नहीं करना चाहिये? क्या थालें चांदीकी ही होनी चाहियें? क्या वे अैसी सुन्दर और सुघड़ नहीं हो सकतीं, जैसी कि हम लोग आम तौर पर काममें लेते हैं? और राजभवनोंमें परदे, गिलाफ वगैरा खादीके क्यों नहीं हो सकते? राजभवनोंको सजानेमें जहां भी हो सके खादीका अुपयोग करके और जीवनमें सादी और स्वच्छ पद्धति अपनाकर गवर्नरोंको जनता और अपनी सरकारोंके सामने अुदाहरण पेश करना चाहिये। अिसमें केवल किफायतशारीका ही सवाल नहीं है; अिससे सादी जीवन-पद्धतिके सौंदर्य और प्रजातांत्रिक कुलीनताको मान और प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

३-३-'५३ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

तम्बाकू पीने पर होनेवाला खर्च

शिकागोसे प्रकाशित होनेवाले 'अिन्डस्ट्रियल वर्कर' नामक पत्रने अपने ५ दिसम्बर, १९५२ के अंकमें अमेरिकामें तम्बाकू पीने पर कितना खर्च होता है अिसके आंकड़े दिये हैं:—

> "तम्बाकूके व्यापारियोंके राष्ट्रीय संघका अनुमान है कि अमेरिकाका औसत दर्जेका सिगरेट पीनेवाला अपने व्यसन पर सालाना ९०.५६ डालर खर्च करता है। और सिगरेटोंकी सालाना संख्या ३,७८,३०,००,००,००० के आश्चर्यकारी अंक पर पहुंचती है। कीमत? ४,०८,१०,००,००० डालरसे ज्यादा। अमेरिकामें लोग गैर-टिकाअू चीजों पर जो खर्च करते हैं, सिगरेटों पर होनेवाला खर्च अुसका ३.६ प्रतिशत है।"

क्या आंकड़ोंका कोअी अुत्साही विद्यार्थी या अर्थशास्त्री बीड़ी और सिगरेट पर हिन्दुस्तानमें होनेवाले खर्चका आंकड़ा मालूम करनेकी कोशिश करेगा? साथ ही सरकार अिस बुरी आदतको छोड़कर राष्ट्रीय बचत करनेका प्रचार-आन्दोलन जारी करे, तो

www.vinoba.in

काफी लाभ हो सकता है। यह काम पंचवर्षीय योजनाके अन्तर्गत पूंजीके निर्माणके कार्यक्रमके अंगकी तरह भी किया जा सकता है। अुससे दूसरा लाभ यह होगा कि तम्बाकूकी खेतीसे जमीनका अुद्धार होगा और हम अन्नकी खेती बढ़ा सकेंगे।

२-२-'५३ म० प्र०

(अंग्रेजीसे)

चेचक और लसी

चेचक या शीतलासे बचनेके लिअे अेक लसीकी खोज हुअी है और सरकार हमारे देशमें बरसोंसे अुसका अुपयोग अनिवार्य रूपसे करती रही है। यह लसी तैयार करनेमें जीवदयाका भंग होता है — पशुओंके साथ निर्दय और क्रूर व्यवहार होता है। अिस लसीके बारेमें अेक जोरदार डाक्टरी राय यह है कि लसीसे फायदा होता है, यह बात निश्चयके साथ नहीं कही जा सकती। अिस कारणसे विलायतमें अिसका अुपयोग करना न करना लोगोंकी मर्जी पर छोड़ दिया गया है; और जिन लोगोंका अुसके लिअे सैद्धान्तिक विरोध है, अुन्हें अुससे मुक्त रखा जाता है।

अिस बातकी चर्चा करनेवाली 'शीतळा अने रसी' (चेचक और लसी) नामक गुजराती पुस्तक बम्बअीकी जीवदया मंडली (१४९, शराफ बाजार, बम्बअी–२) ने प्रकाशित की है। अुसके लेखक हैं श्री वाघजीभाअी चूडासमा।

लेखकने स्व० श्री किशोरलालभाअीसे चेचकके टीकेके अनिवार्य कानूनके संबंधमें पूछा था। अुनका जवाब अिस पुस्तकमें छपा है, जो नीचे अुद्धृत किया जाता है:

"बजाज वाड़ी,
२६-४-'५२

"भाअीश्री,

"आपका पत्र मिला। अगर चेचकका टीका अनिवार्य-रूपसे लगानेका कानून बनाया गया हो, तो अुसके खिलाफ जरूर आवाज अुठानी चाहिये और प्रचार भी करना चाहिये। टीकेके खिलाफ जिन्हें अेतराज हो, अुन्हें अिस कानूनका भंग करके सजा भी भोगनी चाहिये। लेकिन मुझे लगता है कि अिसका कानून अनिवार्य नहीं होगा। मनुष्यके मूलभूत अधिकारोंको छीननेवाला अैसा कानून बनाया जा सकता है या नहीं, यह तो वकील ही कह सकते हैं। लेकिन अैसा कानून बनाया जा सकता हो, तो भी सत्याग्रहीको अुसकी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं। क्योंकि वह तो सजा भोगनेके लिअे तैयार ही रहता है।

कि० घ० मशरूवालाका वन्देमातरम्"

मनुष्य अपने शरीरमें अमुक दवाका प्रवेश करावे या न करावे, अिसके निर्णयका अधिकार अुसीको होना चाहिये। चेचक, बी०सी० जी० वगैराके टीकेका विचार मनुष्यके अिस मूलभूत अधिकारको ध्यानमें रखकर ही किया जाना चाहिये।

२८-२-'५३ म० प्र०

(गुजरातीसे)

हमारा राष्ट्रगीत

प्रिय संपादक महोदय,

आप मेरे अिस कथनसे सहमत होंगे कि हमारे 'जन-गण-मन' और 'वन्देमातरम्' के राष्ट्रगीतोंको सही ढंगसे गानेके बारेमें अभी तक हम अपना सार्वजनिक कर्तव्य पूरा नहीं कर पाये हैं। क्या यह बड़े दुःख और लज्जाकी बात नहीं है कि सार्वजनिक अवसरों पर ये गीत अुनके अुपयुक्त स्वर और लयके बिना और अुनमें व्यक्त की गअी भावनाकी थोड़ी भी परवाह किये बिना गाये जाते हैं? क्या हमारा यह अनुभव नहीं है कि गानेवाला ये राष्ट्रगीत अपने मनमाने ढंगसे गाता है और अुसमें व्याकरणकी (और अकसर अुच्चारणकी भी — संपा०) बिलकुल परवाह नहीं की जाती? जब 'वन्देमातरम्' के सिर्फ दो पद गानेका रिवाज पड़ गया है, तब पूरा गीत गाना और अधीर बने हुअे श्रोताओंको लम्बे समय तक खड़े रखना क्या असभ्यता नहीं है?

आज आजादी पाये हमें ५॥ बरस हो चुके हैं। क्या हमारी अिस भारी गलतीको जल्दीसे जल्दी सुधारनेका समय नहीं आ गया है? क्या आप अिसे अुचित नहीं मानते कि हमारे अिन राष्ट्रगीतोंको समान रूपसे, स्वर-तालके साथ और अेक आवाजसे गानेका तरीका तय करनेके लिअे विभिन्न राज्योंके मुख्य-मुख्य शिक्षा-शास्त्रियों और संस्कारी संगीत-शास्त्रियोंके प्रतिनिधियोंकी अेक कमेटी नियुक्त की जानी चाहिये? अेक बार अिस बारेमें निर्णय हो जानेके बाद प्रकाशन और सूचना-विभागका यह काम हो जाता है कि वह गीतोंके राग और स्वर ऑल अिंडिया रेडियो द्वारा देशके कोने-कोनेमें फैला दे। तभी अिन राष्ट्रगीतोंको सामूहिक रूपसे अेक स्वरमें गाना संभव होगा।

पी० के० मोहान्ती

[मैं पत्रलेखकसे पूरी तरह सहमत हूं। अिस विषयमें स्कूल भी मदद कर सकते हैं, बशर्ते वे सही ढंगसे और अच्छी तरह विद्यार्थियोंको ये गीत गाना सिखायें। — म० प्र०]

(अंग्रेजीसे)

आगामी हिन्दुस्तानी परीक्षाअें

लिखावटसे तीसरी तककी आगामी हिन्दुस्तानी परीक्षाअें ता० २६ अप्रैल, १९५३ को होंगी। फीसके साथ आवेदन-पत्र वर्धा कार्यालय पहुंचानेकी आखिरी तारीख २६ मार्च, १९५३ है।

अिन परीक्षाओंमें बैठनेके लिअे नागरी और अुर्दू दोनों लिपियां जानना आवश्यक है। विशेष जानकारीके लिअे नीचे दिये हुअे पते पर पत्रव्यवहार किया जाय।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, अमृतलाल नाणावटी
वर्धा (म०प्र०) परीक्षा-मंत्री

मुनाफेकी अर्थ-व्यवस्था कैसे मिटे?

मुनाफा न लिया जाय, तो भी कच्ची अुपजका मूल्य तथा कारीगरों और कार्यालय पर होनेवाला खर्च तो मालकी कीमतमें जोड़ना ही होगा, जिससे मालकी कीमत मजदूरोंकी पहुंचके बाहर हो जाती है और बिक्री कम होती है। पूंजीकी अर्थ-व्यवस्था (investment economy) में, फिर चाहे वह व्यक्तिकी हो या समुदायकी या राज्यकी, मुनाफा लेना ही पड़ेगा। जब-जब विनिमय होगा, साथमें मुनाफा जुड़ता जायगा। अिसमें धृत्तिका सवाल नहीं है। जब हिसाब पैसेमें रखा जाता है, और अलग-अलग रखा जाता है, तब मुनाफा लेना आवश्यक हो जाता है। नहीं तो नुकसान होता है, पूंजीमें कमी आती है और अुत्पादनका काम किया ही नहीं जा सकता। अैसी हालतमें तो राज्य भी अुत्पादनका काम नहीं कर सकता, चाहे हर चीज पर राज्यकी ही मालिकी हो। राज्यका और शासनका खर्च तो माल पर जोड़ना ही पड़ेगा। शासकों और शासनके कर्मचारियोंकी जीविका अिसी तरह चलती है। ये लोग भी परभोजी वर्गके हैं; दूसरे लोग अुन्हें अपनी मेहनतके बल पर पालते-पोसते हैं। यानी बाकी लोग अपनी कमाअीका अेक हिस्सा अुन पर खर्च करते हैं और खुद अपनी कमाअीकी बनिस्बत कम अुपभोग करते हैं, क्योंकि मजदूरोंको जितना मिलता है अुसकी अपेक्षा वस्तुओंकी कीमत बहुत ज्यादा होती है।

www.vinoba.in

विनिमयकी किसी भी आर्थिक पद्धतिसे मुनाफेकी अर्थ-व्यवस्था नहीं मिटाओी जा सकती। अुसका अेक ही अुपाय है। सारा अुत्पादन सब लोगोंकी सामान्य सम्पत्ति माना जाय और जो लोग या तो अुत्पादन करते हैं या कोअी सेवा करते हैं, अुन सबके हितमें अुनसे (पैसे या विनिमयके रूपमें) बिना कोअी कीमत लिये अुसका अुपयोग किया जाय। अुत्पादन सीधा सामाजिक अुपयोगके लिअे हो।

(अंग्रेजीसे) म० प्र० ति० आचार्य

प्रायोगिक संशोधन और अहिंसक आन्दोलन

[अभी कुछ ही दिन हुअे यूनेस्कोकी ओरसे युद्ध रोकने और शान्तिकी स्थापना करनेकी गांधीजीकी प्रणालीका अभ्यास करनेके लिअे नअी दिल्लीमें अेक गोष्ठीकी आयोजना हुअी थी। हमारे देशमें भी अैसे कअी लोग हैं, जो समझना चाहते हैं कि स्वराजके बादकी नयी राजनीतिक परिस्थितियोंमें गांधीजीकी सत्याग्रहकी प्रणालीका अुपयोग किस तरह हो सकता है। सारी दुनियाके लोग आज पृथ्वी पर शान्ति और सद्भावना चाहते हैं, और अुसके लिअे आजकी हालतोंमें अभीष्ट परिवर्तन करके आदर्शकी तरफ बढ़ना चाहते हैं। आज ठंडे युद्ध और गरम युद्धसे लेकर दूसरे अनेक अुपाय किये जा रहे हैं, पर कोअी सन्तोषजनक नतीजा नहीं निकल रहा है। अिसलिअे भारतके बाहर लोगोंके कितने ही मंडल और समुदाय गांधीवादी रास्तेका अभ्यास करनेका प्रयत्न कर रहे हैं; वे लोग दूसरे देशोंके अैसे ही सहकारियोंके सहयोगमें रहना चाहते हैं। अमेरिकाके अेक अैसे ही मंडलने (२४६, वाशिंग्टन स्ट्रीट, ग्लेन रिज, न्यू जरसी) हमें अपनी संशोधक कमेटीकी पहली रिपोर्ट यहांके वैसे ही मानसवाले लोगोंकी जानकारीके लिअे भेजी है।

अिस रिपोर्टमें से आवश्यक हिस्सा नीचे दिया जा रहा है।

२९-१-'५३ —म० प्र०]

हम सब अैसा समाज चाहते हैं, जिसमें शान्ति हो, सहकार हो, और जो हिंसा तथा शोषणसे मुक्त हो। हममें से कअी, खासकर जिन्हें शान्तिवादी (pacifists) कहा जाता है, अिस नये समाज और नयी दुनियाके निर्माणके प्रयत्नमें अपना पूरा या कम समय भी दे रहे हैं। लेकिन हमारे प्रयत्न अकसर कमजोर होते हैं, और अिस कार्यकी हमारी समझ काफी अस्पष्ट-सी होती है।

शान्तिवादियोंके किसी मंडलकी चर्चा सुनिये; कोअी कहता है हमें सहकारके आधार पर चलनेवाले छोटे-छोटे समाज बनाने चाहियें, दूसरा अनिवार्य सैनिक तालीमका विरोध करने पर जोर देता है, तीसरा कहता है हमें पुअेर्टोरिकोको शिष्ट-मंडल भेजना चाहिये, चौथा रंग-भेदकी समस्याके हलके लिअे प्रत्यक्ष अहिंसक आन्दोलन शुरू करनेका प्रस्ताव करता है, तो पांचवां कहता है कि सरकारको कर देना बन्द करनेकी मुहिम शुरू की जाय। अन्तमें कोअी अिस सारी चर्चाका अुपसंहार करते हुअे कहता है कि जिसे जो कार्य आकर्षक और ठीक मालूम होता हो, वह अुसी कामको हाथमें ले। लेकिन ये सब काम आवश्यक हैं और अिनमें से प्रत्येक काममें हमारा कोअी-न-कोअी आदमी होना ही चाहिये।

फिर वे अपने चुने हुअे काममें लग जाते हैं। लेकिन अिन विविध योजनाओंमें अुनकी शक्ति बंट जाती है, और अुनकी अुत्साहकी तीव्रता सन्देहके कारण धीमी पड़ने लगती है। हरअेकके मनमें यह शंका अुठने लगती है कि अुसका अपना काम अहिंसक समाजका निर्माण करनेमें सचमुच सहायक हो रहा है या नहीं।

तो कार्यकी अितनी विविधता, निश्चयका अैसा अभाव और अितना भ्रम क्यों है? हम कहां जा रहे हैं, और वहां जानेके लिअे हमें क्या करना चाहिये, अिसकी बिलकुल स्पष्ट दृष्टि हमारे पास क्यों नहीं है?

क्या अुसका कारण यह है कि हम अपनेको ठीक नहीं जानते, और न समाजके अन्दर जो कअी ताकतें काम कर रही हैं, अुन्हें ठीक पहचानते हैं? हम लोग शान्तिकी बात करते हैं, जब कि हम न तो शान्तिको समझते हैं, और न युद्धको। हम सहकार पर चलनेवाला समाज बनाना चाहते हैं, लेकिन हम सहकार या होड़का अर्थ कितना कम समझते हैं। हम प्रेम और वैर शब्दोंका प्रयोग करते हैं, लेकिन हम अपने ही मनोवेगों तथा प्रेरणाओंको समझनेमें असमर्थ हैं।

मनमाना विचार करनेकी जगह हमें व्यवस्थित ज्ञान, भावुकताकी जगह प्रयोगशील वृत्ति और विषयके मौजूदा अज्ञानकी जगह सामाजिक विज्ञान तथा अहिंसक आन्दोलनोंका पूरा अभ्यास करना चाहिये।

सफल सैनिक नेता वे बनते हैं, जिन्होंने पुराने युद्धोंका पूरा अभ्यास किया होता है। अिसी तरह सफल क्रांतिकारी वे होते हैं, जिन्होंने भूतकालकी क्रांतियोंका, सामाजिक और आर्थिक विज्ञानका सावधानीसे विश्लेषण किया हो, और समाजमें काम कर रही ताकतोंको समझनेकी कोशिश की हो। अहिंसक आन्दोलनकी सफलताके लिअे अुसके अनुयायियोंमें अैसे आदमी होने चाहियें, जिन्होंने पुराने अहिंसक आन्दोलनोंका सावधानीसे अभ्यास किया हो, जिन्हें अहिंसाके दर्शनका स्पष्ट ज्ञान हो और समाजके अहिंसक रूपान्तरके शास्त्रका परिचय हो।

यह भी याद रखना होगा कि जो लोग अहिंसामें विश्वास करते हैं, अुनका ध्येय आन्दोलनकी 'सफलता' से कहीं बड़ा है। किसी विशेष अुद्देश्यकी तात्कालिक सिद्धिका हमें जितना महत्त्व है, अुतना ही महत्त्व अपने जीवन और आचरणकी गुणवत्ताका भी है। हमारी रहन-सहन और हमारे आचरणकी गुणवत्ता भी बड़ी हद तक हमारे अपने और समाजके अधिक वास्तविक बोध पर निर्भर करती है।

अभी कुछ दिन पहले शान्तिके सेवकोंका अेक मंडल अहिंसक क्रांतिके क्षेत्रमें अैसे संशोधन और अहिंसाकी प्रक्रियाके अैसे शास्त्रके निर्माणकी आवश्यकता पर चर्चा करनेके लिअे अिकट्ठा हुआ था। अिस मंडलने अहिंसाके प्रयोगके जिन क्षेत्रोंका अभ्यास करनेकी आवश्यकता है, अुनकी चर्चा की और अुनमें संशोधनको प्रोत्साहन देने तथा तत्सम्बन्धी विचारों और परिणामोंका आदान-प्रदान करनेके लिअे योजनायें तैयार कीं।

यह मंडल, जिसे फिलहाल शान्तिसेवियोंकी संशोधन-कमेटी (Peace-makers Research Committee) नाम दिया गया है, अैसा समझता है कि अिस विषयमें दिलचस्पी रखनेवाले अभ्यासी या समाजशास्त्री या अहिंसाका आन्दोलन करनेवाले दल आदि होंगे, लेकिन जो खुद अैसा संशोधनका काम नहीं कर रहे हैं। संभवतः अुन्हें अिस बातकी ठीक कल्पना नहीं होगी कि दरअसल किन सवालोंका अध्ययन करना है, या करना है तो किस तरह करना है। आन्दोलन करनेवाले दल अपनी प्रयुक्त पद्धतिका मूल्य आंकनेकी अिच्छा रखते होंगे, लेकिन अुनके पास संशोधनका कौशल नहीं है। अभ्यासी लोग अहिंसा पर विषय-विवेचक प्रबन्ध आदि तैयार करना चाहते होंगे, लेकिन शायद यह नहीं जानते होंगे कि अुसकी जानकारी कहांसे मिल सकती है, या अुन्हें अुसका अभ्यास करनेके लिअे सहायताकी आवश्यकता महसूस होती होगी।

शान्तिसेवियोंकी यह संशोधन-कमेटी अहिंसाकी प्रक्रियामें संशोधनको प्रोत्साहन देनेका आयोजन निम्न अुपायोंके जरिये करना

www.vinoba.in

चाहती है, वे अिस प्रकार हैं:— (१) जिन सवालोंका अभ्यास करनेकी जरूरत है, अुन्हें स्पष्टतापूर्वक भाषाबद्ध करना; (२) जिनसे अिस विषयकी जानकारी मिल सकती है अुन पुस्तकों, लेखों, पुस्तिकाओं आदिकी सूचियां तैयार करना; (३) संशोधनके परिणामों और तत्सम्बन्धी विचारोंके लेन-देनको प्रोत्साहन देना; और (४) अहिंसाके अिस तरहके अभ्यासमें जिनकी रुचि है, अुनके बीच सम्पर्क स्थापित करना।

अहिंसाके कम-से-कम चार अैसे क्षेत्र हैं, जिनका अध्ययन होना जरूरी है:— (१) अहिंसक आन्दोलनोंमें जिनका अुपयोग होता है, अैसी कार्यपद्धतियां, कार्ययोजना और कौशल; (२) रचनात्मक कार्यक्रम; (३) समाज-व्यवस्थाके सिद्धान्त; और (४) अहिंसाका तत्त्वज्ञान। शान्तिसेवियोंकी यह संशोधन-कमेटी अिन चारों क्षेत्रोंमें पैदा होनेवाले सवालोंको स्पष्टतापूर्वक तैयार करना चाहती है।

जो भाओी अिस काममें हमारी मदद कर सकते हों, अुनसे अनुरोध है कि वे कमेटीसे अपना सम्पर्क साधें।

(अंग्रेजीसे)

दहेजकी कुप्रथा

अेक भाओीने मुझे अखबारकी कतरन भेजी है, जिसमें बताया गया है कि हालमें जबसे अिपीरियल टेलिग्राफ अिंजीनियरिंग सर्विसके अेक कर्मचारीने सगाओीके वक्त बीस हजारका नकद दहेज लिया और लड़कीके माता-पितासे लग्नके दिन और बादमें दूसरे खास मौकों पर भारी रकमें देनेका वचन लिया है, तबसे हैदराबाद (सिन्ध) में वरोंकी मांग बहुत ज्यादा बढ़ गओी है। जो भी नवयुवक दहेजको विवाहकी शर्त बनाता है, वह अपनी शिक्षा पर लांछन लगाता है, देशको बदनाम करता है और स्त्रीजातिका अपमान करता है। देशमें कओी युवक-संगठन चलते हैं। मैं चाहता हूं कि ये संगठन अिस तरहके प्रश्न हाथमें लें और अुन्हें हल करें। अैसे संघ या मंडल भीतरसे ठोस सुधार करनेवाले मंडल बननेके बजाय, जैसा कि अुन्हें बनना चाहिये, अकसर आत्म-श्लाघा करनेवाले बन जाते हैं। यद्यपि ये कभी-कभी सार्वजनिक आन्दोलनोंको अच्छी मदद पहुंचाते हैं, फिर भी यह याद रखना चाहिये कि जनताकी प्रशंसा ही देशके नवयुवकोंका पारितोषिक है। अगर अैसे कामके पीछे आन्तरिक सुधारका बल न हो, तो संभव है वह नौजवानोंमें अनुचित आत्म-श्लाघाका भाव पैदा करके अुन्हें नीचे गिरा दे। दहेजकी शर्मनाक प्रथाकी निन्दा करनेके लिअे मजबूत जनमत खड़ा किया जाना चाहिये और जो नौजवान अैसा पापका पैसा लेकर अपने हाथ गन्दे करते हैं अुन्हें समाजसे बाहर निकाल देना चाहिये। लड़कियोंके माता-पिता अंग्रेजी डिग्रियोंसे चौंधियाना बन्द कर दें और अपनी लड़कियोंके लिअे सच्चे बहादुर नवयुवक प्राप्त करनेको अपनी छोटी-छोटी जातियों और प्रान्तसे बाहर जानेमें न हिचकिचायें।

('यंग अिंडिया', २१-६-'२८)

यह प्रथा नष्ट होनी ही चाहिये। विवाह माता-पिताके बीच खरीद-फरोख्तकी चीज तो रहनी ही नहीं चाहिये। दहेज प्रथाका जात-पांतके साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है। जब तक किसी खास जातिके कुछ सौ नवयुवकों और नवयुवतियों तक वर या कन्याकी पसन्दगी मर्यादित है, तब तक यह कुप्रथा जारी ही रहेगी, भले ही अुसके खिलाफ दुनियाभरकी बातें कही जायं। अिस बुराओीको अगर जड़मूलसे अुखाड़ फेंकना है, तो लड़कियों या लड़कों या अुनके माता-पिताको ये जात-पांतके बंधन तोड़ने ही होंगे। विवाह जो अभी छोटी अुम्रमें होते हैं, अुसमें भी हमें फेरफार करना होगा। और अगर जरूरी हो, यानी ठीक वर न मिले, तो लड़कियोंमें यह हिम्मत होनी चाहिये कि वे अनब्याही ही रहें। अिस सबका अर्थ यह हुआ कि अैसी शिक्षा दी जाय, जो राष्ट्रके युवकों और युवतियोंकी मनोवृत्तिमें क्रांति पैदा कर दे। यह हमारा दुर्भाग्य है कि जिस ढंगकी शिक्षा आज हमारे देशमें दी जाती है, अुसका हमारी परिस्थितियोंसे कोओी सम्बन्ध नहीं; जिससे होता यह है कि राष्ट्रके मुट्ठीभर लड़कों और लड़कियोंको जो शिक्षा मिलती है, अुससे हमारी परिस्थितियां अछूती ही रहती हैं। अिसलिअे अिस बुराओीको कम करनेके लिअे जो भी किया जा सके वह जरूर किया जाय। पर यह साफ है कि यह तथा दूसरी अनेक बुराअियां मेरी समझमें तभी सर की जा सकती हैं, जब कि देशकी हालतोंके मुताबिक — जो तेजीसे बदलती जा रही हैं — लड़कों और लड़कियोंको तालीम दी जाय। यह कैसे हो सकता है कि अितने सारे लड़के और लड़कियां, जो कालेजोंमें शिक्षा हासिल कर चुके हों, अेक अैसी बुरी प्रथाका, जिसका कि अुनके भविष्य पर अुतना ही असर पड़ता है जितना कि शादीका, सामना न कर सकें या करना न चाहें? पढ़ी-लिखी लड़कियां क्यों आत्महत्या करें? क्या अिसलिअे कि अुन्हें योग्य वर नहीं मिलते? अुनकी शिक्षाका मूल्य ही क्या, अगर वह अुनके अन्दर अेक अैसे रिवाजको ठुकरा देनेकी हिम्मत पैदा नहीं कर सकती, जिसका कि किसी भी तरह बचाव नहीं किया जा सकता, और जो मनुष्यकी नैतिक भावनाके बिलकुल विरुद्ध है? जवाब साफ है। शिक्षापद्धतिके मूलमें ही कोओी गलती है, जिससे कि लड़के और लड़कियां सामाजिक या दूसरी बुराअियोंके खिलाफ लड़नेकी हिम्मत नहीं दिखा सकते। मूल्य या महत्त्व तो अुसी शिक्षाका है, जो मानव-जीवनकी हर तरहकी समस्याओंको ठीक-ठीक हल कर सकनेके लिअे विद्यार्थीके मस्तिष्कको विकसित कर दे।

('हरिजनसेवक', २३-५-'३६) मो० क० गांधी

विषय-सूची

		पृष्ठ
राष्ट्रपतिका आश्वासन	मगनभाओी देसाओी	९
भूदान हृदय-शुद्धिका कार्यक्रम है	विनोबा	९
गांधीजी प्रणीत सर्व-समाजी विवाह-विधि	काका कालेलकर	१०
भाव और भावना	मगनभाओी देसाओी	१२
प्रायोगिक संशोधन और अहिंसक आंदोलन		१५
दहेजकी कुप्रथा	गांधीजी	१६
टिप्पणियां :		
महान तानाशाह	म० प्र०	१३
अंग्रेजीके बारेमें प्रधानमंत्रीकी राय	म० प्र०	१३
गवर्नर सम्बन्धी खर्च	म० प्र०	१३
तम्बाकू पीने पर होनेवाला खर्च	म० प्र०	१३
चेचक और लसी	म० प्र०	१४
हमारा राष्ट्रगीत	पी० के० मोहानी	१४
आगामी हिन्दुस्तानी परीक्षायें	अ० नाणावटी	१४
मुनाफेकी अर्थ-व्यवस्था कैसे मिटे?	म० प्र० ति० आचार्य	१४

www.vinoba.in